



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Papankusha Ekadashi

पापांकुशा एकादशी को महत्वपूर्ण एकादशियों में से एक माना जाता है क्योंकि जो लोग इस दिन को मनाते हैं उन्हें स्वास्थ्य, धन और सभी सांसारिक इच्छाओं का आशीर्वाद मिलता है। यह भी माना जाता है कि यदि कोई व्यक्ति पापांक्षा एकादशी का व्रत नहीं करता है, तो वह कभी भी अपने पापों से मुक्त नहीं हो पाएगा और उसके बुरे कर्म जीवन भर जारी रहेंगे। उपवास का यह पूजनीय व्रत पुण्य 100 सूर्य यज्ञ या 1000 अश्वमेध यज्ञ करने के बराबर है।

पापांकुशा एकादशी के दौरान अनुष्ठान:

पापांकुशा दिवस पर हिंदू भक्त कठोर या मौन व्रत रखते हैं। इस व्रत को करने वाले व्यक्ति को सुबह जल्दी उठना चाहिए और स्नान करने के बाद साफ कपड़े पहनने चाहिए। पापांकुशा एकादशी का व्रत अनुष्ठान दशमी के 10वें दिन से शुरू होता है। इस दिन सूर्यास्त से पहले एक समय का सात्विक भोजन किया जाता है और व्रत



एकादशी के अंत तक चलता है। व्रत के दौरान भक्तों को झूठ नहीं बोलना चाहिए और न ही पाप कर्म करना चाहिए। पापांकुशा एकादशी व्रत द्वादशी (12वें दिन) के साथ समाप्त होता है। भक्तों को व्रत खोलने से पहले एक ब्राह्मण को भोजन और दान देना चाहिए। इस व्रत को करने वाले व्यक्ति को दिन हो या रात बिल्कुल भी सोना नहीं चाहिए। वे अपना समय भगवान विष्णु की स्तुति में वैदिक मंत्रों और भजनों का पाठ करने में बिताते हैं। विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना भी बहुत शुभ माना जाता है।

पापांकुशा एकादशी के दिन भगवान विष्णु की विधि-विधान से पूजा की जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के गरुर पर विराजमान स्वरूप की अत्यंत भक्तिभाव से पूजा की जाती है। श्रीहरि के पद्मनाभ रूप की पूजा फूल, पान के पत्ते, दीपक और अगरबत्ती से की जाती है। पूजा अनुष्ठान के अंत में आरती की जाती है।

पापांकुशा एकादशी के दिन दान-पुण्य का भी विशेष फल मिलता है। यदि कोई व्यक्ति व्रत करने में असमर्थ है, तो वह ब्राह्मणों को कपड़े, भोजन और अन्य आवश्यकताएं दान कर सकता है और इस प्रकार वही पुण्य प्राप्त कर सकता है। कुछ लोग पापांकुशा एकादशी के दिन "ब्राह्मण उत्सव" का भी आयोजन करते हैं। ऐसा माना जाता है



दौरान मनाई जाने वाली एकादशी को पापांकुशा के नाम से जाना जाता है। यह सभी पापों को नष्ट करने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध है और अत्यधिक शुभ है। इस दिन, व्यक्ति को मुझ वासुदेव की भी पूजा करनी चाहिए अपनी सभी इच्छाओं को प्राप्त करने और स्वर्ग और मुक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, उन्हें पद्मनाभ के नाम से जाना जाता है।

जो व्यक्ति लंबे समय तक कठोर तपस्या करके और अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त करके इच्छित फल प्राप्त करता है, वही फल इस दिन भगवान गरुडध्वज के प्रति श्रद्धा अर्पित करने से प्राप्त होता है। पृथ्वी पर सभी पवित्र स्थानों और मंदिरों के दर्शन से प्राप्त पुण्य इस दिन भगवान विष्णु के नाम के जप मात्र से प्राप्त किया जा सकता है। जो लोग सारंगधनुष (भगवान विष्णु का धनुष और बाण) धारण किए हुए सर्वव्यापी भगवान जनार्दन की शरण लेते हैं, उन्हें यमलोक की यातना नहीं सहनी पड़ती।

भले ही कोई व्यक्ति किसी अन्य गतिविधि के परिणामस्वरूप एकादशी का पालन करता है, उसे कभी भी यम (मृत्यु के देवता) की पीड़ा का सामना नहीं करना पड़ता है। जो व्यक्ति भगवान विष्णु का भक्त होते हुए भी भगवान शिव की आलोचना करता है।



उसे भगवान विष्णु के राज्य में स्थान नहीं मिलता और वे अनिवार्य रूप से नरक में गिरेंगे। इसी तरह, यदि शैव या पाशुपत परंपरा का पालन करने वाला कोई व्यक्ति भगवान विष्णु की आलोचना करता है, तो उन्हें भयानक रौरव नरक में डाल दिया जाता है और चौदह इंद्रों का युग पूरा होने तक उबाला जाता है। यह एकादशी स्वर्ग, मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य, सौंदर्य, धन और मित्र प्रदान करती है और सभी के लिए लाभकारी है।

हे राजा! एकादशी का व्रत और रात्रि जागरण करने से मनुष्य सहज ही भगवान विष्णु के लोक को प्राप्त कर लेता है। हे राजाओं के राजा! ऐसा व्यक्ति माता की ओर से दस पीढ़ियों, पिता की ओर से दस पीढ़ियों और यहां तक कि पत्नी के परिवार की भी दस पीढ़ियों का उद्धार करता है। जो लोग एकादशी व्रत का पालन करते हैं वे जीवन के बाद भगवान विष्णु के धाम को जाते हैं।

आश्विन माह के शुक्ल पक्ष में पापांकुशा व्रत करने से मनुष्य को सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है और उसे भगवान श्रीहरि की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति सोना, तिल, भूमि, गाय, अन्न, जल, जूते और छाते का दान करता है, उसे कभी मृत्यु के देवता यमराज का सामना नहीं करना पड़ता।



हे महान राजा! अपनी क्षमता के अनुसार, एक निराश्रित व्यक्ति को भी अपने दिन को सफल बनाने के लिए स्नान और प्रार्थना जैसे कार्यों में संलग्न रहना चाहिए। जो लोग स्नान, पाठ, ध्यान और यज्ञ जैसे पुण्य कर्म करते हैं उन्हें यम की भयानक पीड़ा का सामना नहीं करना पड़ता है। समाज में, जिन व्यक्तियों को लंबी आयु, धन, कुलीन वंश और अच्छे स्वास्थ्य का आशीर्वाद प्राप्त होता है, वे अपने पिछले जीवन में सदाचारी थे, जिसके कारण उन्हें अपने वर्तमान जीवन का आनंद मिलता है।

जानें क्या करें और क्या न करे

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, एकादशी व्रत के दौरान लहसुन, प्याज और मांसाहारी भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति इस दिन व्रत नहीं रखता है और उसके परिवार का कोई सदस्य एकादशी का व्रत कर रहा है तो इस दिन चावल का सेवन नहीं करना चाहिए।

1. जो लोग एकादशी का व्रत नहीं रखते उन्हें भी इस दिन शराब या अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। कहा जाता है कि इससे भगवान विष्णु क्रोधित हो जाते हैं।

2. प्रचलित मान्यता के अनुसार, एकादशी व्रत के दिन तेल, साबुन,



शैम्पू आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस दिन महिलाओं को बाल भी नहीं धोने चाहिए। इसके अलावा, इस दिन पुरुषों को अपने बाल या दाढ़ी काटने की अनुमति नहीं है।

3. पापांकुशा एकादशी के दिन चावल, बैंगन और दाल नहीं खाना चाहिए। एकादशी के दिन इन खाद्य पदार्थों को खाना अशुभ माना जाता है। साथ ही इस विशेष सफाई से बचना चाहिए।

4. पापांकुशा एकादशी के व्रत वाले दिन भगवान विष्णु के सामने दीपक जलाएं। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई इस दिन भगवान विष्णु को दीपक दिखाता है तो उसे मृत्यु के बाद स्वर्ग में जगह मिलती है।

5. आज पापांकुशा एकादशी व्रत के दौरान भगवान विष्णु की पूजा करने के बाद व्रत कथा का पाठ अवश्य करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि एकादशी व्रत करने से जीवन के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

Related Articles



[Vishnu Shantakaram Mantra](#)



[Aja Ekadashi Vrat Katha](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com



Follow us on:

